कोविड के समय सर्दियाँ: अत्याधिक गंभीर आपदा

“प्रवासी मजदूर झोपड़ियों में रहते हैं... और 4-5 फीट ऊंचाई वाली एक झोपडी में लगभग 6-8 लोग रहते हैं ताकि अंदर का तापमान बना रहे। एक रात एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ भारी बर्फबारी हुई थी, एक मजदूर ने अपनी झोपडी से बाहर नंगे पाँव कदम रखा (क्योंकि उसके पास पैरों में पहनने को कुछ था ही नहीं) और वह हाइपो-थर्मिया से ग्रसित हो गया। दो दिनों में उसके पैर लाल हो गए और जल्द ही काले पड़ गए, फिर गंभीर रूप से संक्रमित हो गए और परिणामस्वरूप उसके पैर काटने पड़े।“

(हमारी उत्तराखंड टीम के सदस्य मोहित राघव द्वारा साझा की गई प्रदेश में वापस लौटे प्रवासी मजदूर के बारे मे वास्तविक स्थिति)

“जब आप शून्य से दस तक आगे बढ़ते हैं तो यह विकास है। लेकिन जब आप शून्य से भी कम (minus) से शून्य (0) की ओर बढ़ते हैं तो यह विकास नहीं बल्कि अस्तित्व बचाए रखने का प्रयास है।“

अंशू गुप्ता, संस्थापक, गूँज

किसी से भी पूछिए और वे आपको बताते हैं कि जीवित रहने के लिए तीन बुनियादी जरूरतें हैं भोजन, आवास और कपड़ा। परंतु कपड़ा जिसे अक्सर अनदेखा किया जाता है, न केवल गरिमा और सौंदर्यशास्त्र का पहलू है, बल्कि अस्तित्व के लिए भी इसका विशेष महत्व है| जो गर्माहट हमे सर्दियो मे पसंद आती है, जिसका हम आनंद लेते हैं, चाहे सुबह रजाई की गर्माहट मे रहना हो या आरामदेह स्वेटर या शाल पहनना, य़ह आज भी कई लोगों के लिए एक दूर का सपना है।

इस साल लम्बी चलने वाली महामारी से निपटने के दौरान चक्रवात और बड़े पैमाने पर मानसून की बाढ़ के कारण लाखों लोग अपने घर और आजीविका खो बैठे। अब सर्दी लाखों लोगों के लिए बदतर समय लाएगी। कुछ क्षेत्रों में सर्दी ने बस अभी दस्तक ही दी है, लेकिन उत्तर के क्षेत्रों में ऐसा नहीं है जहां पहले से ही भीषण सर्दी हो चुकी है। इसलिए हर साल सर्दियों की शुरुआत में ही गूंज सर्दियों के अपने वार्षिक अभियान 'ओढ़ा दो ज़िन्दगी' की शुरुआत करता है.

'ओढ़ा दो ज़िन्दगी' (ODZ) के माध्यम से गूंज लोगों की चेतना जागृत करने और अपने आसपास के लोगो के लिए इस सर्दी का सामना करने के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने का प्रयास करता है। यह अभियान शहरी जनता से आग्रह करता है कि सर्दियों के लिए आवश्यक योगदान दे कर आवश्यक चीजों में योगदान कर इस खाई को पाटने में एक सार्थक भूमिका निभाएं। संगृहित सामग्री व्यापक विंटर किट का हिस्सा बन जाती है, जो भारत के विभिन्न हिस्सों में पूरे परिवार की जरूरतों को पूरा करती है। हालाँकि, इन किटों को सिर्फ दान के रूप में नहीं दिया जाता है, इसके बजाय, ग्रामीण समुदाय अपने गाँवों में स्वयं की पहचान के मुद्दों पर काम करते हैं जैसे कुएँ खोदना, बाँस के पुल बनाना, सड़कों की मरम्मत करना आदि और फिर इन किटों को गूंज की 'डिग्निटी फॉर वर्क' (DFW) पहल के अंतर्गत उनके प्रयासों के लिए पुरस्कार के रूप में दिया जाता है।

हमारी कश्मीर टीम के सदस्य फायज़ कहते हैं -

"मेरा यकीन करिये, इन दिनों जब भी मैं खाना खाने के लिए अपना हाथ कंबल से बाहर निकालता हूं तो सोचता हु कि क्या मुझे आधा हो खाना चाहिए ताकि मैं अपना हाथ अंदर कंबल में रख सकूँ!"

कार्य क्षेत्र से कहानियां

शीतकालीन सामग्री ने विकास को बढ़ावा दिया और सौहार्द फैलाया

उत्तराखंड में जीवन के लिए तालाब

उत्तराखंड मे चमोली जिले के पुदियानी गाँव में पानी की भारी किल्लत की वजह से वहां की महिलाओं को अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। जिसका समाधान करने के लिए 45 महिलाओं ने साथ मिलकर 10*4.2 फुट तालाब के लिए गड्डा खोदा और कुछ ही दिनों पश्चात उनके द्वारा खोदा गया तालाब सिचाई करने तथा जानवरों के लिए पानी संग्रह करने के लिए तैयार था।

कुओं का मरम्मत कार्य

कार्य के लिए गरिमा (Dignity For Work - DFW) पहल के अंतर्गत 100 से अधिक ग्रामीणों ने 5 कुओं की सफाई की,जिनमे से कुछ कुओं की गहराई 40 फुट तक थी, ग्रामीणों ने सारा कार्य केवल स्थानीय संसाधनों की सहायता से किया। महाराष्ट्र के पालघर ज़िले में स्थित गुन्डाले, किरत एवं लोवारे गाँव के ग्रामीणों ने निर्णय लिया कि वह वर्षा होने से पहले ही अपने गंदे कुओं की सफाई कर लेंगे। और अब वह काफी खुश हैं की वर्षा होने के बाद उनके पास पीने के लिए पर्याप्त साफ़ पानी है। समुदाय के एक सदस्य का कहना है, "हम प्राप्त नतीजो से बहुत खुश हैं। अब हमे पीने योग्य साफ़ और शुद्ध पानी मिल सकेगा।"

महाराष्ट्र में पुल निर्माण कार्य

पालघर ज़िले में दिगीपाडा और गून्डाले गांव के 8 परिवारों को हर साल सूर्य नदी में आये उफ़ान के रूप में मॉनसूनी वर्षा की मार झेलनी पड़ती है। बहुत बार इनको आपातकालीन परिस्थिति में अस्पताल पहुँचने के लिए जंगल के बीच से असहनीय लंबे रास्तो से होकर गुजरना पड़ता था।

पूरे पंद्रह दिन तक स्थानीय निवासी अपने कार्य क्षेत्र तक नहीं पहुंच पाते व बच्चों को स्कूल से वंचित रहना पड़ता था। 22 ग्रामीण साथ आए और लकड़ी का पुल बनाने का कार्य किया। 2 दिन के श्रम के पश्चात उन्होंने 35 फुट लम्बा, 3 फुट चौड़ा और 10 फुट ऊँचा पुल तैयार किया। इस पुल ने ना सिर्फ लोगों को दूसरे इलाकों के साथ जोड़ा बल्कि सभी ग्रामीणों मे एकता और सशक्तिकरण की भावना को भी जागृत किया।

कार्य क्षेत्र से जानकारी:

- **तत्काल राहत सहायता**
  - 4,741,000 + किलोग्राम राशन और अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाई गयी
  - 300,600+ परिवारों तक पहुंच
  - 362,200+ तैयार भोजन चैनलाइज़ किया गया
- **भागीदारी**
  - 26 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो में 450+ से अधिक सहभागी संस्थाओ के साथ काम।
  - उद्योग जगत, संगठनों, तथा व्यक्तियों के साथ व्यापक स्तर पर काम।
- **स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल**
  - 6,25,000+ फेस मास्क
  - 8,25,000+ क्लॉथ सैनिटरी पैड
  - 58,000+ अंडरगारमेंट्स
  - 9,47,000+ अन्य आवश्यक वस्तुएं

- **कुल डिग्निटी फॉर वर्क** (DFW) **परियोजनाएं** 1,800+
    - 1200+ सब्जी बागान लगाए गए
    - जल संसाधन का कुल क्षेत्र जिसे साफ / मरम्मत / बनाया गया

        -तालाब क्षेत्र 3,00,000+ वर्ग मी

        -बैक वाटर 64,000+ वर्ग मी

        -नहर 1,37,000+ वर्ग मी

- **अब तक समर्थित** 26 **सामुदायिक रसोइयों के माध्यम से** 2,03,300+ **भोजन**
- **किसानो से सीधे तौर पर** 2,08,000 **किलो से अधिक फल और सब्जिया खरीदी गयी।**

हमारा साथ दें:

- सामग्री सहयोग के रूप में - https://bit.ly/2yR000h
- राशि सहयोग के लिये- goonj.org/donate
- गूँज के लिए फण्ड रेजिंग कैंपेन शुरू करने के लिए हमे jibin@goonj.org पर मेल करे।

पिछली डिग्निटी डायरी:

- अक्टूबर 1: सामग्री पथ पर: गूंज प्रसंस्करण इकाइयों (प्रोसेसिंग यूनिट) में
  अक्टूबर 16-: गूँज प्रसंस्करण इकाई (प्रोसेसिंग यूनिट) के भीतर: राहत किट - "उम्मीदों का बैग"- तैयार करना

  इन रिपोर्ट्स को पढ़ने के लिए यहां क्लिक करें: http://bit.ly/2K1JH3e

योगदान के तीन अच्छे सुझाव:

- देश के कई हिस्सों में बाढ़ और चल रही महामारी ने बहुतों के लिए जीवन असंभव बना दिया है। 'ओढ़ा दो ज़िन्दगी' (Odha Do Zindagi - ODZ) के साथ, आइये यह सुनिश्चित करें कि आने वाली सर्दियां उन लोगों के लिए एक और आपदा में ना बदल जाए जिनके पास कमी है। अपने ऊनी साझा करें, संग्रह शिविर आयोजित करें, और उनका साथ दें। https://goonj.org/

- घर पर एक गूंज की गुल्लक शुरू करें। चाहे आप किसी भी मुकाम पर हों... लोगो की ज़िन्दगी में योगदान देने को एक आदत के रूप में गले लगाने का सबसे सरल तरीका है ..http://goonj.org/goonj-ki-gullak/
- गूंज के साथ संग्रह शिविर करने के लिए साइन अप करें- अपनी कॉलोनी में रीसाइक्लिंग और पुनरुपयोग के चैंपियन बनें...अपनी अतिरिक्त और उपयोग में न आने वाली सामग्री को जुटाने के लिए लोगों को एकजुट और प्रेरित करें।
https://goonj.org/collection-camps/

<u>संपर्क करे :</u>

मुख्यालय : J-93, सरिता विहार, नई दिल्ली - 76

011-26972351/41401216